मंत्रों के जाप का महत्व

मंत्र जाप कितने तरीकों से किया जा सकता है? शास्त्रों के अनुसार मंत्र जाप करने का सही तरीका क्या है? बेहद कम लोग जानते हैं कि मंत्र जाप के भी प्रकार हैं यानी मंत्र जाप के कई तरीके हैं और हर तरीके के लिए अलग-अलग नियम। अगर मंत्र जाप ठीक से न किया जाए, तो वह फलित नहीं होता और न ही उसकी ऊर्जा आपको किसी प्रकार का लाभ पहुंचाती है। आइए समझते हैं कि मंत्र जाप कितने प्रकार के होते हैं और सही तरीके से मंत्र का जाप कैसे करना चाहिए।

डॉ .विपिन शर्मा
ज्योतिषाचार्य

मंत्र जाप के नियम

जाप तो कई लोग करते हैं, लेकिन ठीक तरीके से जाप करने के शास्त्रीय नियम क्या हैं, इसके बारे में बेहद कम लोगों को जानकारी है। मंत्र जाप के लिए शरीर की शुद्धि आवश्यक है। इसलिए स्नान करके ही मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप हमेशा घर में एकांत व शांत स्थान में करना चाहिए। पहले लोग प्राकृतिक परिवेश जैसे कि पेड़ के नीचे, नदी के किनारे, वन में, साधना स्थल इत्यादि जगहों पर करते थे। इससे न केवल एकाग्रता में मदद मिलती है, बल्कि प्रकृति से भी ऊर्जा मिलती है। जाप के लिए कुश के आसन पर बैठना चाहिए, क्योंकि कुश उष्मा का सुचालक होता है। इससे मंत्रोच्चार से उत्पन्न ऊर्जा हमारे शरीर में समाहित होती है। जाप में रीढ़ की हड्डी बिल्कुल सीधी रखें, ताकि सुषुम्ना नाड़ी में प्राण का प्रवाह आसानी से हो सके, क्योंकि सुषुम्ना नाड़ी से पूरे शरीर में ऊर्जा प्रभावित होती है। जाप में मंत्रोच्चारण की गति समान रहनी चाहिए यानी न बेहद तेज और न धीमी। अगर संभव हो, तो मानसिक जाप यानी मन में ही मंत्र का जाप करें और मंत्र का शुद्ध उच्चारण करें। गलत उच्चारण से आपको नुकसान हो सकता है या मंत्र का प्रभाव नगण्य हो सकता है। अगर आप साधारण जप कर रहें हैं, तो तुलसी की माला का प्रयोग करें, लेकिन कामना सिद्ध करने वाले मंत्र जाप में चंदन या रूद्राक्ष की माला प्रयोग करें।

मंत्र जाप के प्रकार

- नाम जाप से भक्त के भारी से भारी संकट भी मिट जाते हैं।
- मोक्ष प्राप्ति के लिए अंगूठे के साथ तर्जनी को मिलाकर जाप करना चाहिए।
- हिन्दू धर्म में कई ऐसे मंत्र हैं, जिनका जाप करना बेहद लाभदायक होता है। इसलिए कई लोग समय निकालकर मंत्र जाप करते हैं और मंत्र से जुड़ी ऊर्जा का लाभ लेना चाहते हैं। शास्त्रों के अनुसार मंत्र तीन प्रकार के होते हैं- वैदिक मंत्र, तांत्रिक मंत्र और शाबर मंत्र। मंत्र जाप भी तीन प्रकार से किया जाता है।
- वाचिक जप-जब बोलकर मंत्र का जाप किया जाता है, तो वह वाचिक जाप की श्रेणी में आता है।
- उपांशु जप- जब जुबान और ओष्ठ से इस प्रकार मंत्र उच्चारित किया जाए, जिसमें केवल ओष्ठ कंपित होते हुए प्रतीत हों और मंत्र का उच्चारण केवल स्वयं को ही सुनाई दे, तो ऐसा जाप उपांशु जप की श्रेणी में आता है।
- मानसिक जाप- यह जाप केवल अंतर्मन से यानी मन ही मन किया जाता है। कई लोग ध्यान और साधना के दौरान मंत्र जाप करते हैं। रामचरित मानस में लिखा है कि 'जापहिं नामु जन आरत भारी। मिटहिं कुसंकट होहि सुखारी।।' अर्थात नाम जाप से भक्त के भारी से भारी संकट भी मिट जाते हैं।

मंत्र जाप का समय

मंत्र का जाप ब्रह्म मुहूर्त में करना सबसे अच्छा माना जाता है, लेकिन अगर समय नहीं है, तो किसी भी समय कर सकते हैं। मंत्र का जप प्रातः काल पूर्व दिशा की ओर मुख करके करना चाहिए एवं शाम में पश्चिम दिशा की ओर मुख करके जप करना श्रेष्ठ माना गया है। मंत्र का प्रभाव महसूस करने के लिए कम से कम एक माला तक मंत्र जाप अवश्य करना चाहिए। अक्षत, अंगुलियों के पर्व, पुष्प आदि से मंत्र जाप की संख्या नहीं गिननी चाहिए। मोक्ष-प्राप्ति के लिए अंगूठे के साथ तर्जनी को मिलाकर जाप करना चाहिए। मानसिक शांति व संतोष के लिए अंगूठे के साथ मध्यमा और सिद्धि के लिए अंगूठे व अनामिका से जाप किया जाना चाहिए। सर्वसिद्धि के लिए कनिष्ठा उंगली और अंगूठे को मिलाकर जाप करना सर्वोत्तम है।

अवतारवाद: विकासवाद का अध्यात्मपरक वैज्ञानिक विमर्श

भारतीय धर्म एवं संस्कृति में वर्णित अवतारवाद, विकासवाद का अध्यात्मपरक वैज्ञानिक सिद्धांत है, जिसका मूल उद्देश्य धर्म की स्थापना और अधर्म का नाश करना रहा है। अवतार का अर्थ है नीचे उतरना, अवतरित होना, जो दिखाई नहीं दे रहा है, उसका व्यक्त होना, प्रादुर्भाव अथवा आविर्भाव। भगवान द्वारा अवतार लेने के कई कारण बताए गए हैं, जिनमें प्रमुख है धरती का भार उतारना। मूल्यों में आई अनैतिकता तथा अधार्मिकता के कारण जब जागतिक सत्ता और उसके नियमन का विनाश होने लगता है, प्रकाशमय वातावरण अंधकारमय हो जाता है।

ऋत के स्थान पर अनृत और धर्म के स्थान पर अधर्म का प्रभाव बढ़ जाता है, तब-तब पृथ्वी पर मनुष्य या पशु रूप में महानदेव का अवतार होता है, जो इस प्रकार के अधार्मिक, अनैतिक, मूल्यविहीन सत्ता का विनाश करके पुनः धरती पर धर्म, नैतिकता और मूल्ययुक्त आदर्श की स्थापना करता है।

अवतार की सिद्धि दो दशाओं में मानी जाती है-एक तो रूप का परिवर्तन अर्थात् 'स्व' रूप का त्याग कर कार्यवश नवीन रूप धारण करना तथा दूसरा है नवीन जन्म ग्रहण कर तद्नुरूप में आना, जिसमें माता के गर्भ में उचित काल तक स्थापित होकर जन्म ग्रहण करना। प्रहलाद के रक्षार्थ अथवा गजेन्द्र को घड़ियाल के बंधन से मुक्त कराने हेतु भगवान विष्णु का अपने रूप में आविर्भाव अवतारों के 'स्व' रूप के त्याग का उदाहरण है, जबकि राम-कृष्ण आदि अवतार नवीन जन्म धारण कर अवतरित होने के उदाहरण हैं। अवतार का प्रसंग प्रायः किसी अलौकिक शक्ति संपन्न भगवान के लिए ही उपयुक्त माना जा सकता है।

डॉ. रज्जन कुमार
प्रोफेसर

अवतार कई प्रकार के होते हैं, जैसे पूर्णावतार, अंशावतार, विमावतार, कलावतार, विभूतिवतार, व्यूहावतार, गुणावतार, अर्चावतार आदि। जब भगवान स्वयं प्रकट होते हैं, वह विमावतार कहलाता है। यह साक्षात और आवेश दो प्रकार का होता है। आवेश भी दो प्रकार का होता है-शक्ति आवेश व रूप आवेश। पहले में केवल भगवान की शक्ति किसी प्राणी में आती है और दूसरे में किसी प्राणी के शरीर में भगवान प्रवेश करते हैं और वह भगवान बन जाता है। भगवान की शक्तियां अनंत हैं, परंतु धरती पर अधिकतम 16 कला का ही अवतार होता है, इससे अधिक की आवश्यकता नहीं होती है। जब कला से अवतार होता है वह कलावतार कहलाता है। अवतार में जब कला 1/16 होती हैं, तो वह अंशावतार कहलाता है। इससे कम वाला विभूतिवतार है। सब अवतारों की शक्तियां समान होती हैं, जिस काल में जितनी शक्ति की आवश्यकता होती है उतनी ही शक्ति का प्रयोग किया जाता है। अतएव 16 कला के कृष्णावतार, 9 कला के रामावतार, मोहिनी अवतार और परशुरामावतार सभी बराबर हैं और भगवान हैं। पूर्णावतार में भगवान चतुर्व्यूह में अवतरित होते हैं। वासुदेव, बलराम, प्रदयुम्न और अनिरुद्ध- ये कृष्णावतार के व्यूह हैं। राम, लक्ष्मण, भरत व शत्रुघ्न रामावतार के व्यूह हैं। सभी अवतार अपने-अपने कार्य पूर्ण करने के पश्चात सशरीर अपने लोक में चले जाते हैं।

ज्ञान का वितरण

ज्ञान का वितरण भी भगवान के अवतार का प्रयोजन है। भगवान ही सब गुरुओं के गुरु हैं तथा सब ज्ञान के आधार हैं। वहीं से ज्ञान की धारा लोकमंगल के लिए प्रवाहित होती है, जिसके कतिपय बिंदुओं को पाकर मानव धन्य हो जाता है। वह मोक्षाभिलाषी होकर परम श्रेयस को प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर हो जाता है। इस अलौकिक एवं अनुपम लक्ष्य के समक्ष भौतिक क्लेश का विनाश अवतार का बहुत ही अल्प ध्येय माना जा सकता है। अवतरित अवतार इस लोक में व्याप्त अहितकारी एवं विनाशकारी शक्तियों का शमन करते हुए धर्म की स्थापना करता है। इस धर्म की स्थापना में आततायियों द्वारा संसार के मनुष्यों के ऊपर कई तरह जुल्म किए जाते हैं। जैसे- शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक, भावनात्मक आदि। प्रायः मनुष्य इनसे मुक्त होना चाहता है। अवतार उन्हें इनसे मुक्ति दिलाता है, लेकिन वह उन्हें इस तथ्य से भी अवगत कराता है कि ये सभी भौतिक एवं लौकिक दुःख और ताप हैं। मानव जीवन का लक्ष्य इन क्षुद्र और क्षणिक दुःखों से मुक्ति पाना नहीं है। उसका ध्येय तो पूर्ण मुक्ति पाना है, जो मोक्ष, निर्वाण, कैवल्य और विवेकख्याति है। यही मनुष्य का चरम लक्ष्य है और मानव जीवन का चरमोत्कर्ष भी। इसकी प्राप्ति ज्ञान, कर्म और भक्ति के द्वारा संभव है, जिनका संदेश एवं मार्ग अवतार ने अनेकशः किया है।

बोध कथा

क्षमा

ललित नगरी के राजा अनंतदेव एक बार अपने महल में भोजन कर रहे थे। अचानक खाना परोस रहे सेवक के हाथ से थोड़ी सी सब्जी राजा अनंतदेव के कपड़ों पर छलक गई। राजा अनंतदेव की त्यौरियां चढ़ गईं। जब सेवक ने यह देखा तो वह थोड़ा घबराया, लेकिन कुछ सोचकर उसने प्याले की बची सारी सब्जी राजा अनंतदेव के कपड़ों पर उड़ेल दी। अब तो राजा अनंतदेव के क्रोध की सीमा न रही। अनंतदेव ने सेवक से पूछा, तुमने ऐसा करने का दुस्साहस कैसे किया? सेवक ने अत्यंत शांत भाव से उत्तर दिया, महाराज! पहले आपका गुस्सा देखकर मैंने समझ लिया था कि अब मेरी जान नहीं बचेगी, लेकिन फिर सोचा कि लोग कहेंगे की राजा अनंतदेव ने छोटी सी गलती पर एक बेगुनाह को मौत की सजा दे दी। ऐसे में आपकी बदनामी होती। तब मैंने सोचा कि सारी सब्जी ही उड़ेल दूं ताकि दुनिया आपको बदनाम न करे और मुझे ही अपराधी समझे। राजा अनंतदेव को उसके जबाव में एक गंभीर संदेश के दर्शन हुए कि एक सेवक अगर राजा को क्षमा कर सकता है, तो मैं राजा होकर क्या एक सेवक को क्षमा नहीं कर सकता। क्षमा करने वाला, गलती करने वाले से सदैव बड़ा होता है। ऐसा सोचकर राजा शर्मिंदा हुआ और सेवक को क्षमा कर दिया।

-सुरेन्द्र अग्निहोत्री

पौराणिक कथा

भगवान श्रीकृष्ण और कुम्हार

गोपियां भगवान कृष्ण को छेड़तीं थीं और जब कान्हा कोई शरारत करते तो गोपियां उनकी शिकायत लेकर मां यशोदा के पास पहुंच जातीं। मां यशोदा गोपियों की रोज-रोज की शिकायतों से बहुत परेशान हो गईं। एक बार नाराज होकर माता यशोदा एक छोटी सी छड़ी लेकर कान्हा के पीछे दौड़ीं। मां यशोदा उन्हें डपटना चाहती थीं, लेकिन मां को अपनी तरफ यूं आते देखकर कान्हा भागने लगे। कान्हा आगे-आगे और मां यशोदा, उन्हें पकड़ने के लिए पीछे-पीछे दौड़ने लगीं। कान्हा भागकर एक कुम्हार के पास जा पहुंचे, उन्होंने कुम्हार से कहा कि मुझे जल्दी से छुपा लो वरना मां यशोदा मुझे पकड़ने के लिए आ रही हैं। कुम्हार सोच में पड़ गया कि वह उन्हें कहां छुपाएं, लेकिन फिर उसे उपाय सूझा और उसने उन्हें एक बड़े से घड़े के नीचे छुपा लिया। कुछ देर बाद ही माता यशोदा भी वहां पहुंच गईं। वह अपने बालक को तलाश रही थीं, क्योंकि उन्होंने उसे इधर ही आते देखा था। जब उन्हें कान्हा कहीं नहीं दिखे तो उन्होंने कुम्हार से पूछा। क्यों रे तूने मेरे कान्हा को कहीं देखा क्या? वह इधर ही कहीं आया है। अपने काम में मगन कुम्हार बोला, "नहीं मैया मैंने तो कन्हैया को नहीं देखा। मैं तो अपने काम में व्यस्त था।" नंदलाल मैया और कुम्हार की सारी बातें घड़े के अंदर से सुन रहे थे। कुछ देर बाद जब आवाज आना बंद हो गई, तो उन्होंने जान लिया कि मैया वहां से चली गई हैं, तो उन्होंने कुम्हार से कहा, "मुझे इस घड़े के नीचे से बाहर निकालो।" कुम्हार जानता था कि कान्हा के रूप में प्रभु हैं, उसने कहा, "कन्हैया मैं तुम्हें इतनी आसानी से बाहर नहीं निकालने वाला, पहले तुम मुझे चौरासी लाख योनियों के बंधन से मुक्त करने का वचन दो।" नंदलाल कुम्हार की चतुराई पर मुस्कुराए। इसके बाद उन्होंने कहा, "ठीक है मैं तुम्हें चौरासी लाख योनियों से मुक्त करने का वचन देता हूं। अब तो मुझे बार निकाल दो।" कुम्हार ने फिर मन ही मन सोचा कि आज तो प्रभु श्री कृष्ण मेरे बस में हैं। मैं जो भी मांगूगा मुझे मिल जाएगा। यह मौका फिर तो मिलने वाला नहीं है, उसने मन ही मन विचार किया और फिर कहा, "प्रभु मुझे अकेले को नहीं मेरे परिवार के सभी लोगों को चौरासी लाख योनियों के बंधन से मुक्त करने का वचन दो। इसके बाद ही मैं तुम्हें इस घड़े से बाहर निकालूंगा।" कान्हा ने मुस्कुराते हुए कहा, "चलो ठीक है मैं तुम्हारे परिवार के सभी सदस्यों को भी चौरासी लाख योनियों के बंधन से मुक्त करने का वचन देता हूं। अब तो बाहर निकालो।" इसके बाद भी कुम्हार ने उन्हें बाहर नहीं निकाला, उसने कुछ देर विचार किया और फिर कहने लगा। मेरी एक विनती है तुम उसे पूरी कर दोगे, तब ही मैं तुम्हें यहां से बाहर निकालूंगा।

भगवान श्रीकृष्ण को कुम्हार की इन बातों में आनंद आने लगा था। भगवान ने कहा, "ठीक है अपनी यह बात भी बता दो।" कुम्हार ने तुरंत ही कहा, "प्रभुजी आप जिस घड़े के नीचे छिपे हुए हैं, उसकी मिट्टी मेरे बैलों पर लादकर के लाई गई है। इस कारण से मेरे बैलों को भी आप चौरासी लाख योनियों के बंधन से मुक्त कर देने का वचन दो।" भगवान श्रीकृष्ण कुम्हार की इस बात पर बहुत ही प्रसन्न हुए, उन्होंने तुरंत ही कुम्हार के बैलों को भी चौरासी लाख योनियों के बंधन से मुक्त करने का वचन दे दिया। अब कुम्हार ने फिर कहा, "प्रभु मेरी एक इच्छा बाकी रह गई है, उसे भी पूरा कर दो वरना तुम फिर मेरे हाथ थोड़ी न आओगे।" भगवान श्री कृष्ण ने घड़े के अंदर से मुस्कुराते हुए पूछा, वह भी बता दो। कुम्हार ने कहा," प्रभु मेरी अंतिम इच्छा यह है कि जो भी प्राणी हम दोनों के इस संवाद को सुनेगा आप उसे भी चौरासी लाख योनियों के बंधन से मुक्त करने का वचन दीजिए। इसके बाद ही आप को घड़े से बाहर निकालूंगा।" कुम्हार के इस प्रेम को देख सुनकर भगवान श्री कृष्ण बहुत खुश हुए, उन्होंने उसकी वह अंतिम इच्छा भी पूरी करने का वचन दे दिया। कुम्हार ने अपनी सारी इच्छाएं पूरी कराने के बाद घड़े को उठा दिया और कान्हा को बाहर निकाल दिया। इसके बाद कुम्हार ने कन्हैया को गले से लगा लिया। गोवर्धन पर्वत को अपनी उंगली पर उंगली पर उठा लेने वाले भगवान कृष्ण चाहते, तो तुरंत ही घड़े से बाहर आ सकते थे, लेकिन यह उनकी एक लीला थी।

-फीचर डेस्क

सप्ताह के प्रमुख व्रत

देवउठनी एकादशी

देवउठनी एकादशी शनिवार 1 नवंबर 2025 को सनातन धर्म में हर तिथि हर व्रत का अलग-अलग महत्व है। साल में 24 एकादशी के व्रत रखे जाते हैं। हर महीने में दो बार एकादशी व्रत किया जाता है। एक कृष्ण और दूसरा शुक्ल पक्ष में। धार्मिक मान्यता है कि एकादशी तिथि पर जगत के पालनहार भगवान विष्णु और मां लक्ष्मी की विशेष पूजा करने से जातक को शुभ फल की प्राप्ति होती है। उन्हीं एकादशी में से देवउठनी एकादशी का विशेष महत्व है। इस दिन से पाताल लोक में आराम करने के लिए गए भगवान विष्णु जागते हैं और फिर से सृष्टि का संचालन संभालते हैं। इसलिए इसे देवोत्थान या देवउठनी एकादशी या देव प्रबोधिनी एकादशी भी कहते हैं।

तुलसी विवाह - रविवार, 2 नवंबर 2025

तुलसी विवाह का महत्व- तुलसी विवाह में माता तुलसी (जिसे वृंदा देवी भी कहा जाता है) और श्रीशालिग्राम भगवान (जो भगवान विष्णु का स्वरूप हैं) का विवाह होता है। मान्यता है कि इस विवाह से घर में सुख, समृद्धि और सौभाग्य का वास होता है, जो लोग अपने घर में यह विवाह कराते हैं, उन्हें भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी का विशेष आशीर्वाद प्राप्त होता है। मान्याता है कि इस दिन व्रत रखने से अविवाहित कन्याओं को अच्छा वर मिलता है। वहीं विवाहित दंपतियों के जीवन में इस व्रत को रखने से खुशहाली आती है।

गीता : जीवन का प्रकाशपुंज

कुरुक्षेत्र के मैदान में अर्जुन मोहग्रस्त थे और सत्य की रक्षा के लिए अपने बंधु-बांधवों से युद्ध करने में हिचक रहे थे। उस समय भगवान श्रीकृष्ण ने अपने परम मित्र भक्त अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था। गीता के रूप में स्वयं भगवान श्रीकृष्ण के मुख से निकले उपदेश किसी जाति, धर्म और संप्रदाय की सीमा से आबद्ध नहीं हैं, बल्कि यह संपूर्ण मानव जाति के कल्याण का मार्ग हैं। पाश्चात्य जगत में विश्व साहित्य का कोई भी ग्रंथ इतना अधिक उद्धरित नहीं हुआ है, जितना कि भगवद्गीता।

अरविंद जयतिलक
स्वतंत्र लेखक

भगवद्गीता ज्ञान का अथाह सागर है। जीवन का प्रकाशपूंज व दर्शन है। शोक और करुणा से निवृत होने का सम्यक मार्ग है। भारत की महान धार्मिक संस्कृति और उसके मूल्यों को समझने का ऐतिहासिक-साहित्यिक साक्ष्य है। इतिहास भी है और ज्ञान-कर्म दर्शन भी। समाजशास्त्र और विज्ञान भी। लोक-परलोक दोनों का आध्यात्मिक मूल्य भी। गीता के प्रथम अध्याय में कुरुक्षेत्र के युद्धस्थल में अर्जुन का मोहग्रस्त होना, करुणा से अभिभूत होकर अपनी शक्ति खो देना इत्यादि का भली-भांति उल्लेख है। दूसरा अध्याय हमें देहांतरण की प्रक्रिया, परमेश्वर की निष्काम सेवा के अलावा स्वरूपसिद्ध व्यक्ति के गुणों से अवगत कराता है। तीसरे, चौथे व पांचवे अध्याय में कर्मयोग और दिव्य ज्ञान का उल्लेख है। यह अध्याय इस सत्य को उजागर करता है कि इस भौतिक जगत में हर व्यक्ति को किसी न किसी प्रकार के कर्म में प्रवृत होना पड़ता है। छठा, सातवां और आठवें अध्याय में ध्यानयोग, भगवद्ज्ञान और भगवद् प्राप्ति कैसे हो इसका मार्ग सुझाया गया है। ध्यानयोग में बताया गया है कि अष्टांगयोग मन तथा इन्द्रियों को कैसे नियंत्रित करता है। भगवद्ज्ञान में भगवान श्रीकृष्ण को समस्त कारणों के कारण व परमसत्य माना गया है। नवें और दशवें अध्याय में परम गुह्य ज्ञान व भगवान के ऐश्वर्य का उल्लेख है। कहा गया है कि भक्ति के मार्ग से जीव अपने को ईश्वर से संबद्ध कर सकता है। ग्यारहवें अध्याय में भगवान का विराट रूप और बारहवें में भगवद् प्राप्ति का सबसे सुगम और सर्वोच्च मार्ग भक्ति को बताया गया है। तेरहवें और चौदहवें अध्याय में प्रकृति, पुरुष और चेतना के माध्यम से शरीर, आत्मा और परमात्मा के अंतर को समझाया गया है। बताया गया है कि सारे देहधारी जीव भौतिक प्रकृति के तीन गुणों के अधीन हैं-वे हैं सतोगुण, रजोगुण व तमोगुण। कृष्ण ने वैज्ञानिक तरीके से इसकी व्याख्या की है। पंद्रहवें अध्याय में वैदिक ज्ञान का चरम लक्ष्य भौतिक जगत के पाप से अपने आपको विलग करने की महत्ता पर प्रकाश डाला गया है। सोलहवें, सत्रहवें और अंतिम अठारहवें अध्याय में दैवी और आसुरी स्वभाव, श्रद्धा के विभाग व संन्यास सिद्धि का उल्लेख है। गीता ज्ञान का सागर और जीवन रूपी महाभारत में विजय का मार्ग भी है।